आने वाला कल...

कड़ी संख्या 7

सपनों की सच होती दुनिया...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वय: डॉ। बी.के. त्यागी

पात्र

कर्नल श्रीकांत– **करीब 24–30 वर्ष, फौज में कमांडो और एआई एक्सपर्ट है**

मेजर सोफिया– **करीब 30 वर्ष, डॉक्टर हैं और टेक्नोलॉजी जिज्ञासु**

प्रोफेसर ओम– **करीब 58 वर्ष, एआई विशेषज्ञ**

सुबेदार मेजर राघव– 48 वर्ष, कैप्टन श्रीकांत के साथ पोस्टिड पायलट

दृश्य 1

(तेज गोलाबारी की आवाजें, मशीनगन की आवाज...बूटों के दौड़ने की आवाजें...)

राघव– **धीरे से**– श्रीकांत साहब, दुश्मन ने गोलाबारी तेज कर दी है...हमारे रोबोट्स ने उनकी प्रणाली तो ध्वस्त कर दी...पर ये तो आते ही जा रहे हैं...और यहां हम सिर्फ आठ लोग ही पहुंच पाए हैं...बाकी पूरी पलटन तो पीछे ही फंस गई है... अब क्या करें???

श्रीकांत– **हल्की हंसी के साथ**– क्या राघव जी आप सोचते हो कि हम ही अक्लमंद है और दुश्मन नासमझ...हमारे बाकी साथी, दुश्मन की प्लानिंग के तहत ही पीछे रोके गए हैं...उन्हें मेरे बारे में और हमारी पूरी टीम के बारे में पता था...अब हमें खत्म करने की उनकी योजना कामयाब होती मालूम हो रही है...

राघव– श्रीकांत जी जब आपको पता था तो भी दुश्मन के जाल में सीधे चले आए...और अब हम चारो ओर से घिरते जा रहे हैं...

– तभी तेज बम फटने की आवाज और फिर तेज गोलियां चलने की आवाजें –

श्रीकांत– **चिल्लाकर** – राघव जी...कैप्टन...तुम लोग उस चट्टान से...हां ठीक...अपनी पोजिशन होल्ड करो...सिर्फ दुश्मन दिखाई देने पर फायर करो...रेडियो...

– रेडियो जैसे उपकरण की सीटी जैसी आवाजें...जैसे फ्रीक्वेंसी चेंज करने पर आती है–

श्रीकांत– चार्ली टू अल्फा...चार्ली टू अल्फा...हां हम चारो तरफ से घिर गए हैं...दुश्मन जबरदस्त गोलाबारी कर रहा है...लेकिन सीधे हम निशाना नहीं है...शायद हमें जिंदा पकड़ना चाहते हैं...ऑपरेशन टिड्डी दल ऑन...मेरे इशारे पर... ओवर एंड आउट...

– गोलाबारी की आवाज थोड़ी कम होती जा रही है –

राघव– ऑपरेशन टिड्डी दल?...मेजर श्रीकांत आप अपनी टीम से ही छुपा रहे हो...पता नहीं दुश्मन को हम कितनी देर रोक पाएं...ये ऑपरेशन टिड्डी दल क्या है?

श्रीकांत– **हंसते हुए** – बस ये समझ लीजिए राघव जी...आपकी आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस ही काम पर है...दुश्मन को अब हम नहीं रोकेंगे...इन्हे ये एआई ही रोकेगी....

राघव– क्या साहब, इतनी मुसीबत में भी आप हंस रहे हो...हमें भी बता दो तो हम भी थोड़ा हंस लें...

तभी कैप्टन की आवाज– सर...पीछे पुल दुश्मन की गोलाबारी से पूरी तरह टूट गया है...अब कोई मदद हमारे लिए नहीं आ सकती...

श्रीकांत– ठीक है कैप्टन, आप सभी मजबूती से अपनी पोजिशन पर डटे रहिए...दुश्मन को कोई रास्ता नहीं देना है...और हां कैप्टन अपने सभी रोबोट्स भी पीछे खींच लीजिए...

कैप्टन– जी सर...लेकिन हमें दुश्मन की पोज़ीशन का अंदाजा कैसे लगेगा?

श्रीकांत– सब अंदाजा हो चुका है, कैप्टन...आप बस अपनी पोज़ीशन मत छोड़िएगा...

कैप्टन– यस सर...

राघव– **श्रीकांत** सर, पुल टूट चुका है...हमें कम से कम साठ–सत्तर दुश्मनों ने घेरा हुआ है और सौ–दो सौ इनके पीछे होंगे...मुझे लगता है कि यहां बैठे–बैठे मरने से अच्छा है कि दुश्मन को मार के मरें...वैसे भी अब शाम होने लगी है...तापमान माइनस पंद्रह से भी नीचे जाने लगा है...

श्रीकांत– राघव जी अब आपकी उम्र होने लगी है...बस घिर गए...बस मरने–मारने की बातें...मतलब मेरे दिमाग पर आपको अभी भरोसा नहीं है, जबकि मेरे साथ आपने रिकॉर्ड पांच बहादुरी के पुरस्कार जीतें हैं और हमारा हर मिशन सफल रहा है... आप भी बस...

राघव– श्रीकांत साहब, आपके लिए जो जान हाजिर है...पर आज आपको लग नहीं रहा कि हम पुरी तरह दुश्मन के चंगुल में फंस चुके हैं...

श्रीकांत– **धीरे से**– और राघव जी क्या पता दुश्मन हमारे चंगुल में फंस गया हो...

– तभी अचानक से गोलाबारी रुक जाती है...एकदम सन्नाटा –

राघव– **फुसफुसाते हुए**– श्रीकांत सर, सारी गोलाबारी रुक गई है...बिल्कुल सन्नाटा है...अब तो अंधेरा भी हो गया है...क्या नाइट विज़न लगाकर, दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखें?

श्रीकांत– कोई नाइट विज़न गॉगल्स नहीं लगाएगा...मैने कहा कि कोई नाइट विज़न गॉगल्स नहीं लगाएगा...और राघव जी...अब हमारी ओर से कोई फॉयर नहीं होगा...नो फॉयरिंग...नो फॉयरिंग...

राघव– जी सर...नो फायरिंग...नो फायरिंग...

– चारो तरफ सन्नाटा है...झिंगुरों की आवाजें–

श्रीकांत– राघव जी शीशा दीजिए...

राघव– ये लीजिए सर...

– पत्थर पर कुछ रगड़ने की आवाजें –

श्रीकांत– **फुसफुसाकर** – चारों तरफ छोटी हरी लाइटें नजर आ रही हैं...कुछ समझें राघव जी???

राघव– **फुसफुसाकर** – दुश्मन रात को आगे बढ़ रहा है सर... अब?

श्रीकांत– सब चट्टान के पीछे पूरी तरह छुप कर बैठे रहो...रेडियो...

– रेडियो जैसे उपकरण की सीटी जैसी आवाजें...जैसे फ्रीक्वेंसी चेंज करने पर आती है–

श्रीकांत– **धीरे से**– चार्ली टू अल्फा...चार्ली टू अल्फा...जी...ऑपरेशन टिड्डी दल...गेट रेडी...शायद आधा घंटा और...गेट रेडी...उन्हे स्लो स्पीड पर आने दो...मेरे इशारे का वेट करो...ओवर एंड आउट...

राघव– श्रीकांत सर...आधे घंटे हैं अभी हमारे पास...

श्रीकांत– **हां...**शायद...

राघव– अरे श्रीकांत सर...तबतक जियो यानी भू इंजीनियरिंग ही समझा दो...

श्रीकांत– क्या राघव जी...वैसे चलो थोड़ा बहुत तो बता ही देता हूं...आप इस शीशे से दुश्मन पर नजर रखो...दो सौ गज़ की दूरी पर आते ही मुझे बता देना...

राघव– जी सर...

श्रीकांत– हां, तो जियो इंजिनियरिंग में एआई और रोबोटिक्स की मदद से धरती पर जो गड़बड़िया हुई हैं उसे दुरुस्त करने के प्रयास करना...

राघव– श्रीकांत सर, वैसे तो मुझे अभी टेंशन बहुत है, पर फिर भी पूछ लेता हूं...ये जो मानव के कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है, ग्लोबल वार्मिंग वगैरह...और जो इससे जलवायु परिवर्तन हो रहा है...क्या ये सब एआई, रोबोट मिलकर ठीक कर देंगे...हमारे सारे पाप ये टेक्नोलॉजी धो डालेगी?

श्रीकांत– राघव जी पाप तो भुगतने पड़ते हैं, लेकिन एआई से सज्जित करोड़ों की संख्या में नैनो रोबोट्स वायुमंडल की कंपोजिशन बदल सकते हैं...जैसे अगर कॉर्बन डाइऑक्साइड की मात्रा अधिक है तो नैनोरोबोट्स उसे सोखेंगे भी और ऑक्सीजन छोड़ेंगे भी...

राघव– **गंभीरता से** – साहब तीन सौ गज़...

श्रीकांत– ...पर इससे पहले जलवायु परिवर्तन को रोकने में एआई की भूमिका हो सकती है, जैसे कार्बन डाइऑक्साइड के स्रोत पता करना और उनका विकल्प सुझाना... बारिश में परिवर्तन के अनुसार खेती में बुवाई, जुताई आदि के समय का सही आंकलन करना और खेती के तरीकों में बदलाव के साथ, खाने के तरीकों में बदलाव भी सुझाना जिससे लोग स्थानीय स्तर पर उगने वाली खाद्य वस्तुओं की अधिक खरीद करें और ग्लोबल वार्मिंग में अपना योगदान कम करें...

राघव– **गंभीरता से** – साहब ढाई सौ गज़...

श्रीकांत– वैसे राघव जी मैने इतनी रोचक बात बताई...आपके पाप धुलवाने में एआई की भूमिका भी बताई और आप हो की गिनती करे जा रहे हो...जियो इंजिनियरिंग कुछ समझ आई की फिर से बताऊं...

राघव– **गंभीरता से** – श्रीकांत साहब आप की हर बात समझ आ गई और ये एआई और नैनोरोबोट्स का मेल तो कमाल का लगा...यानी अगर समुद्र में तेल भी गिरा, उससे पर्यावरण हानि होने से पहले ही ये तो तेल भी चट कर लेंगे...

श्रीकांत– वाह, बिल्कुल सही पकड़ा आपने...राघव जी...

राघव– अब दुश्मन दो गज़ तक पहुंचने की वाला है, बस एक सवाल...ये नैनोरोबोट्स और किस काम के हैं...दो सौ गज़ साहब...

श्रीकांत– **गंभीरता से**– रेडियो...चार्ली टू अल्फा...सेंड फाइव हंड्रेड नाऊ...रिपीट...फाइव हंड्रेड नाऊ...ओवर एंड आउट...**चिल्लाकर**– सब नीचे झुक जाओ...

– बिल्कुल सन्नाटा...हल्की– हल्की दबे पांव झाड़िया पैरों से कुचलने की आवाज आ रही है...

राघव– **दबी ज़बान में** – श्रीकांत सर दुश्मन पास आ रहा है...कुछ हुआ नहीं...

श्रीकांत– **धीरे से** – राघव जी आपने पूछा था कि नैनोरोबोट्स और किस काम के हैं...

– तभी छोटी मोटर की आवाज...जैसे मच्छर भिनभिनाने की आवाज...

श्रीकांत– **ऊंची आवाज में** – तो ये है जवाब...ऑपरेशन टिड्डी दल...नैनोकिलर्स...

– अचानक से मच्छर भिनभिनाने की तेज आवाज और हर आवाज के साथ एक धमाके की आवाज...लगातार ये आवाजे आ रही हैं, जैसे हजारों नैनोरोबोट्स दुश्मन पर टूट चुके हों...गोलियां चलने की आवाजें... दनादन धमाकों की आवाज...चीख...चिल्लाहट...लगातार हमला जारी...

बूटों के भागने की आवाज दूर होती जा रही है...नैनोरोबोट्स की भिनभिनाने की आवाज के बीच –

कैप्टन– चिल्लाकर – दुश्मन भाग रहा है...सर...

श्रीकांत– गुड...जाने दो...अभी सब नीचे ही रहो...रेडियो...चार्ली टू अल्फा...ऑपरेशन टिड्डी दल सक्सेसफुल...आई रिपीट...सक्सेसफुल...बैक अप भेजिए...हम सेफ हैं...जी... आपको भी बधाई...जी...थैंक्स सर...ओवर एंड आउट...

राघव– **खुशी से** – अरे वाह, श्रीकांत साहब, तो ये था आपका ऑपरेशन टिड्डी दल... वाह...मैं तो सोच रहा था कि टिड्डी दल किसी अच्छे काम का है ही नहीं...पर आपके नैनोरोबोट्स की सेना ने हमारे गोलियां चलाए बिना ही जीत दिलवा दी.. .भई वाह...

– सब खुशी से चिल्ला रहे हैं...हंसी...और हैलीकॉप्टरों की आवाज –

श्रीकांत– बैकअप आ गया है...चलिए हमारा यहां से निकलने का टाइम आ गया है...गेट रेडी...

सब एकसाथ– यस सर...

– हैलीकॉपटर की तेज होती आवाज...दृश्य परिवर्तन का संगीत –

– बूटों की आवाज –

राघव– मैं अंदर आ सकता हूं...सर...

श्रीकांत– अरे...राघव जी, क्या राघव जी...आप भी पूछ कर आएंगे अब...सामान पैक हो गया?

राघव– जी श्रीकांत साहब, गाड़ी में रखा है...और आपका सामान?

श्रीकांत– हां, वो ले गए है, बाहर...चलिए...फ्लाइट का टाइम हो रहा है...

– बूटों की दूर जाती आवाज...दृश्य परिवर्तन का संगीत –

– हवाई जहाज के इंजन की आवाज...बूटों की पास आते हुए आवाज...–

श्रीकांत– अरे नमस्कार मेजर सोफिया...तो आप भी चंडीगढ़ चल रही हैं...अरे आप...प्रोफेसर ओम...नमस्कार सर, हमारी मुलाकात एकबार डीआरडीओ के एक कार्यक्रम में हुई थी...

प्रोफेसर ओम– नमस्कार...ओ हां हम मिले थे...आप मेजर...

सोफिया– कर्नल...कर्नल श्रीकांत...कैसे हैं आप...और आपके सक्सेसफुल मिशन की बहुत बधाई...

श्रीकांत– थैंक्स मेजर सोफिया...सर ये सूबेदार मेजर राघव हैं और राघव जी से प्रोफेसर ओम हैं, नागपुर विश्वविद्यालय में एआई के प्रोफेसर हैं...

राघव– नमस्कार प्रोफेसर साहब...अरे वाह आप भी एआई से जुड़ें हैं...तो बस मेरा एक ही सवाल एआई को लेकर भारत और दुनिया में इस समय क्या चल रहा है?

– सम्मलित हंसी –

प्रो. ओम– ठीक है राघव जी, सब बताता हूं...पर अब जरा बैठ लें...फ्लाइट का टाइम हो गया है...

सोफिया– जी...

– हवाईजहाज के टेक ऑफ की आवाज और इंजन की हल्की आवाज में राघव सवाल पूछता है –

राघव– तो प्रोफेसर साहब बताइए...वैसे तो आप तीनों ही एआई के एक्सपर्ट हैं...और मेरे सवाल भी काफी हैं...

ओम– **हंसते हुए–** जरूर...जरूर राघव...

राघव– पर सर मेरा एक सवाल सबसे पहले कर्नल श्रीकांत से...ये नैनोरोबोट्स या नैनोकिलर्स ने दुश्मन को पहचाना कैसे और मारा कैसे?

सोफिया– ओह तो कर्नल श्रीकांत, मिशन में नैनोकिलर्स यूज़ किए गए...ग्रेट...शायद आपका...नहीं आपके दोस्त कर्नल विनीत के ही डिजाइन करे हुए हैं...हैं ना...

श्रीकांत– **जी** मेजर सोफिया...

ओम– अरे वाह...ये इनका पहला मिशन था या पहले भी यूज़ किया है?

श्रीकांत– जी प्रोफेसर ओम ये युद्ध में पहला ही उपयोग था...और काफी सक्सेसफुल रहा..

राघव– सक्सेसफुल? अरे सर, हमारी सबकी जान ही इन नैनोरोबोट्स ने बचाई है...

सोफिया– ओहो तो मामला सीरियस था? वैसे राघव जी इन नैनोरोबोट्स को तैयार तो कर्नल श्रीकांत के अच्छे दोस्त कर्नल विनीत ने ही किया था, पर सबसे पहले इसपर शोध प्रोफेसर ओम की टीम ने ही किया था...

ओम– ठीक कहा मेजर सोफिया...ये नैनोरोबोट असल में एक आत्मघाती रोबोट है...ये बेहद खतरनाक परिस्थितियों में हमारे सैनिकों को बचाने के लिए तैयार किया गया था और उद्देश्य ये है कि हमारे सैनिकों की जान खतरे में पड़े ही नहीं, सीमाओं–बार्डर आदि पर निगरानी रखने के लिए ये नैनोरोबोट रहेंगे और कोई भी खतरा हो उसे खत्म करेंगे...

श्रीकांत– असल में राघव जी इन नैनोरोबोट्स में एक हाई रेसोल्युशन कैमरा लगा है, जो सारा डेटा एक केंद्रीय प्रणाली को भेजता है और इन नैनोरोबोट्स के अंदर खुद भी आंकलन करने के लिए बेहद समझदार साफ्टवेयर लगा है, जो दुश्मन और दोस्त की पहचान दिल की धड़कन, शक्ल आदि से करता है, लेकिन अटैक से पहले केंद्रीय प्रणाली का आदेश अभी आवश्यक रखा गया है...

राघव– ये आत्मघाती कैसे है? नैनोरोबोट्स क्यों कहा गया?

सोफिया– असल में राघव जी, इन नैनोरोबोट्स में बेहद छोटा–सा विस्फोटक होता है, जो अपने लक्ष्य पर जाकर फट जाता है...ये पूरी तरह खुद नष्ट हो जाता है, लेकिन हमें बचा लेता है...बस ऐसा समझिए ये उड़ती गोली है...

ओम– असल में नैनो मतलब होता है, बेहद सूक्ष्म...यानी एक मीटर का टेन रेज़ टू पॉवर नाइन...अब इसे ऐसे समझिए कि एक बाल को लेकर उसके मोटाई से अस्सी हजार टुकड़े करें तो एक टुकड़ा नैनो स्तर का होगा...

राघव– हैं...इतना छोटा...ये तो दिखेगा ही नहीं...

ओम– **हंसते हुए** – अरे नहीं...नहीं...राघव...नैनो तो आजकल बेहद छोटी वस्तुओं को कह दिया जाता है...जैसे एक छोटी कार का नाम भी तो नैनो था...लेकिन ये नैनोकिलर्स करीब तीन बटा तीन इंच के होते हैं...अब जैसे जैसे टेक्नोलॉजी विकसित होगी...ये और छोटे होते चले जाएंगे...

राघव– **कमाल है...**तो एआई के मामले में काफी कुछ हो रहा है...

ओम– हां राघव जी, भारत सरकार के वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टास्क फोर्स जिसका उद्देश्य एआई के द्वारा भारत में आर्थिक बदलाव किया जा सके और इसमें एआई का सबसे अधिक लाभ लघु व मध्यम उद्यमों को मिलेगा। इसके अलावा ग्राहकों से सीधे बात करने वाले पर्सनालाइज्ड एआई प्रणालियां विकसित की जा रहीं हैं...

श्रीकांत– इसी तरह इलैक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार भी शिक्षा संस्थानों के एआई प्रोजेक्ट्स को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इसके अलावा युवा उद्यमियों के लिए टेक्नोलॉजी इनक्यूबेशन एंड डवलपमेंट ऑफ ऑटरप्रिन्योर स्कीम चलाई जा रही है, जिससे तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहन दिया जा सके।

राघव– अच्छा! इतना कुछ हो रहा है...

सोफिया– हां राघव जी और डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया के तहत एआई पर काम करने वाली कंपनियों के लिए कानून को लचीला बनाया गया है, जिससे एआई के क्षेत्र में देश में अच्छा काम हो और सबसे बड़ी बात इन टेक्नोलॉजीस में छत्तीस फीसदी बड़ी वित्तीय संस्थानों ने निवेश किया है और जल्द ही अन्य सत्तर प्रतिशत भी निवेश करने के लिए तैयार हैं...

राघव– कमाल है, श्रीकांत सर ने पहले ही बताया था कि स्वास्थ्य क्षेत्र, कृषि, कन्स्यूमर और रिटेल, शिक्षा, दिव्यांगो, विनिर्माण और आपूर्ति श्रृंख्ला, पर्यावरण, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि क्षेत्र में एआई का उपयोग हो भी रहा है और आगे बहुत बढ़ेगा...पर क्या एआई भविष्य में मानव की जगह ले लेगी? पूरी तरह...

ओम– जवाब हां भी है और नहीं भी...असल में एआई, रोबोट, स्मार्ट मशीन आदि वो ही करती है, जो उसे काम दिया गया है...अब मशीन लर्निंग भी है जिसमें मशीन नई–नई टास्क सीखती रहती है...लेकिन कौन–सी टास्क...वो ही जो उसे करनी है जैसे किसी मशीन को सामान उठाना है...उसे छोटे चार इंच के लकड़ी के टुकड़े दिए गए हैं, तो वो खुद ही समझ लेती है कि कितना दबाव देना है जिससे लकड़ी के टुकडे टूटे नहीं, कितना जोर लगाना है आदि...अब अगर उस मशीन को भारी लोहे का दस इंच का टुकड़ा दे दिया तो वो खुद ही उसके अनुसार अपने दबाव, ताकत को एडजेस्ट कर लेती है...लेकिन काम सामान उठाने का ही करेगी...

सोफिया– एक सबसे बड़ी एआई की भूमिका दिव्यांगो के मामले में है जैसे जो कृत्रिम अंग लगाए जातें हैं, उनमें एक चिप होती है जो खुद व्यक्ति की मांस–पेशियों के मूवमेंट के अनुसार वो क्या काम करना चाहते हैं, जैसे कांच का गिलास पकड़ना...तो वो कृत्रिम हाथ उसे उतनी ही नज़ाकत से पकड़ता है...

राघव– अरे वाह...ये तो कमाल है, बिल्कुल असली की तरह...

श्रीकांत– अरे राघव जी, अब अकेलेपन का इलाज भी एआई आधारित चैटबॉक्स है...जो आपके प्रिय व्यक्ति के सभी हाव–भाव, बोलने का तरीका, जवाब देने का तरीका...सभी कुछ सीख लेता है...और अगर कभी आप उससे बिछुड़ जाएं तो वो उसकी आवाज में, उसी की तरह आपके साथ बातें कर सकता है...ये चैटबॉट अब आपको अकेला नहीं रहने देगा...हालांकि ये है तो रोबोट और विदेशों में अकेलेपन की समस्या अधिक है...लेकिन जिस वैज्ञानिक ने इसे विकसित किया है, उनका कहना है कि चैटबॉट से बात करना बिल्कुल अजीब नहीं रहेगा, क्योंकि लोग एकांत में भगवान से भी तो बात करते हैं...

राघव– भगवान की जगह एआई ले लेगी...ये तो नहीं हो सकता...

ओम– अरे राघव...हर टेक्नोलॉजी हमारी सुविधा के लिए है, कोई किसी की जगह नहीं ले सकता, बस कोशिश है कि एआई को अधिक से अधिक मानवीय भावनाओं को समझने लायक बनाया जाए जिसमें लॉजिकल बात करने...लॉजिकल जवाब देने की क्षमता हो...

सोफिया– एआई ने इतनी तरक्की कर ली है कि एक्स–रे, मेडिकल टेस्ट रिपोर्ट देखकर वो रोग डायग्नोस करने में अधिक कामयाब हो रही है...

राघव– पर क्या ये सब सही है?...मतलब नैतिक रूप से?

श्रीकांत– राघव जी ये आपने सौ आने सच बात कही...असल में सबसे बड़ा मुद्दा नैतिकता का ही है...और अब इसी पर दुनिया का जोर है...असल में एआई को जिस कार्य के लिए विकसित हुई है, उसी में वो अपना खुद का विकास करती है...एआई में भाईभतीजावाद नहीं होता...जात–पात नहीं होती...रंगभेद नहीं होता... बस अपनी टास्क को सबसे बढ़िया तरीके से पूरा करने की क्षमता होती है...

राघव– फिर तो राजनीति में एआई, प्रशासन में एआई, गवर्नेंस में एआई होनी ही चाहिए... एआई की सबसे अच्छी भूमिका तो राज करने में है, कोई भेदभाव नहीं,

सबके लिए न्याय, कोई भ्रष्टाचार नहीं...मुझे तो लगता है कि एआई अगर न्याय आधारित हो तो हर हाथ को काम भी होगा और हर पेट को खाना...

ओम– वाह राघव क्या बात कही है...आपने बिल्कुल सही कहा है...किसी भी टेक्नोलॉजी का मकसद मानवता की भलाई ही होना चाहिए...और अगर एआई को सही रूप में लाया गया तो ये धरती को स्वर्ग बनाने की क्षमता रखती है...

राघव– हां, प्रोफेसर साहब आपने सही कहा...मुझे लगता है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्मार्ट मशीन, मशीन लर्निंग आदि सब है तो बहुत अच्छा...पर शायद अभी मानव खुद ही लर्निंग के चरण में है...सारी बातें सुनकर...मैं उम्मीद कर रहा हूं कि ये एआई प्रणाली मानव की कमजोरियों से मुक्त होगी और सभी को साथ लेकर चलने में कामयाब होगी...

सोफिया– बहुत बढ़िया बात कही राघव जी मानवीय कमजोरियों को दूर करने का सहारा ही तो बनती रही है टेक्नोलॉजी...पर इसबार की छलांग लंबी है...

श्रीकांत– सोफिया जी...ये छलांग भी लगाकर रहेंगे और शायद सपनों की दुनिया भी बनाकर रहें...कुछ छोटे–छोटे प्रयास यहां तक ले आएं हैं...और आगे भी ये ही ले जाएंगे...

ओम– ठीक कहा श्रीकांत...मैं सोचता था कि टेक्नोलॉजी का ये रूप अपने जीते जी नहीं देख पाउंगा...पर अब सब सामने आने लगा है...क्योंकि एआई टेक्नोलॉजी एक बहुत बड़ा प्रोमिस है और इसबार प्रोमिस पूरा होता दिख रहा है...

राघव– ओहो अब से मैं हर बात सही–सही अपने फोन में डालूंगा...और सब सच बताउंगा...

सोफिया– **ऐसा** क्यों राघव जी?

राघव– **अरे** मेजर सोफिया जी आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क तैयार हो रहा है, वो मेरे दिमाग पर ही तो आधारित होगा...कल को एआई का राज आ गया तो मैं चाहता हूं कि सच्चा और न्यायप्रिय राजा हो...अब हर किसी को धूर्तता से दूर रहना होगा...वरना भविष्य में धूर्त राजा मिल सकता है...

ओम– चलो एआई की जागरुकता का एक फायदा तो हुआ...लोगों को सच्चाई की कीमत पता चली...बहुत खूब...

– सब हंसते हैं...हवाईजहाज की तेज आवाज के साथ...समापन –

– समाप्त –